

Research



“I don’t know”

Research Proposal

Research Proposal and Design Proposal

New Knowledge

Plagiarism

An act or instance of using or closely imitating the language and thoughts of another author without authorization and the representation of that author's work as one's own, as by not crediting the original author.

source: [dictionary.com](https://www.dictionary.com)

Journey of PhD

Destination ?

Typography

Typography

- Indian Language Typography
- Terminology
- Classification
- Readability
- Ergonomic studies
- Psychology
- Manuscripts

[illegible]

[illegible]

150
145
140
135
130
125
120
115
110
105
100
95
90
85
80
75
70
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0

150
145
140
135
130
125
120
115
110
105
100
95
90
85
80
75
70
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0

150
145
140
135
130
125
120
115
110
105
100
95
90
85
80
75
70
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0

150
145
140
135
130
125
120
115
110
105
100
95
90
85
80
75
70
65
60
55
50
45
40
35
30
25
20
15
10
5
0

[illegible]

॥ गदापर्वे ॥

पासेनामासीअप्रमेय॥ सकळहीपाषो न गेली क्षय॥ पांडवां प्रणीला भला विजय॥ ऐसें आश्रय जगीं जालें ॥ १२ ॥ दोष नुरले
जे वीर वय॥ रूप रंग व र्मा द्रोण न नय॥ पुढें ने करि ने जाले काय॥ गोअभिप्राय निरोपीं मज ॥ १३ ॥ दुर्योधन कैसा वगला
धर्मिष्ठ धर्म राज कुचाला॥ काय विचार करि ना जाला॥ आद्यं गमला भाव जाणवीं ॥ १४ ॥ संजय स्वर्णो ऐक सादरा॥ सर्वा
चा जाल्या वरी सव्हारा॥ पांडव भयें फुटलें दिवि ॥ हा हाकार थोर वर्गला ॥ १५ ॥ मोकळ्या वेंड्या सर्वां वनिगा॥ पळोला
गल्या पृथ्वीनाथा॥ धर्म युगुत्सु त्यांचिया द्विगा॥ धाडिला अनंताचे निमणे ॥ १६ ॥ नेणें स्त्रिया सोडिल्या पुरीन॥ दुरुनि गे
सो निवृत्तांग॥ रूप प्रमुखी घे महारथ॥ पलायन रंग भयें जाले ॥ १७ ॥ नरुचे स्थिर राहावया स्थान॥ येरी कडे पांडु नंद
न॥ धर्मादिक पावले समाधान॥ विजय लक्षण ग्राही स्तवें ॥ १८ ॥ लाहून थोरीं वाजविले वांख॥ दुर्योधनाचे प्राण पंच
क॥ हराचे स्वर्णो निवोधणूच॥ जाले सकळीक पै कर्णे ॥ १९ ॥ नाना स्थळी धाडिले चार॥ गदा घेवनि गुसावु मरा॥ नदीमा
जि प्रवेचाला सत्वर॥ लाही गोविचार कळला त्यांसि ॥ २० ॥ आंगवाहनें आंगवीर॥ वाजगगा जन हर्षनि भों ॥ निविचाला
गि गेले समग्र॥ धांडोळणी चार करूं लागले ॥ २१ ॥ नवें रूप भोज द्रोण न नय॥ मासिया वचनें वीर वय॥ निज नृपाची
धरुनि सोय॥ नदी रमणीय ने पावले ॥ २२ ॥ नेथें जळस्तंभुनि दुर्योधन॥ दुरालाहो ना आंग आयण॥ ज्यासाचे गेअभि

॥ अथा ॥ १ ॥

“The real seeker of truth never seeks truth. On the contrary, he tries to clean himself of all that is untrue, inauthentic, insincere—and when his heart is ready, purified, the guest comes. You cannot find the guest, you cannot go after him. He comes to you; you just have to be prepared. You have to be in a right attitude.”

—Osho

Thanks !

- Prof. Uday Athavankar
- Dr. Anirudha Joshi*
- Dr. Deepak Kannal
- IDC Family

* treat pending !! HIC!